eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

आधुनिक युगीन शिक्षा एक दृष्टि

अजय पोद्दार 'अनमोल'[1]
[1]विद्यार्थी, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

Received: 15 April 2025 Accepted & Reviewed: 25 April 2025, Published: 30 April 2025

Abstract

वर्तमान युग को तकनीकी, वैश्वीकरण और सूचना क्रांति का युग कहा जाता है, जिसने शिक्षा की परिभाषा, उद्देश्य और साधनों को एक नई दिशा प्रदान की है। आज की शिक्षा प्रणाली पारंपरिक ढांचे से बाहर निकलकर नवाचार, बहुआयामी ज्ञान और व्यावहारिक कौशल की ओर अग्रसर हो रही है। यह शोधपत्र आधुनिक युगीन शिक्षा की अवधारणा, इसकी विशेषताओं, चुनौतियों और संभावनाओं पर केंद्रित है। साथ ही, यह भी विश्लेषण किया गया है कि डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन लर्निंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अन्य तकनीकी उपकरण किस प्रकार शिक्षा के स्वरूप को परिवर्तित कर रहे हैं। यह दृष्टिकोण शिक्षा के मानवीय, सामाजिक और वैश्विक आयामों पर भी प्रकाश डालता है।

कीवर्ड्स– आधुनिक शिक्षा, डिजिटल लर्निंग, तकनीकी शिक्षा, वैश्वीकरण, ई–लर्निंग, नवाचार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, शिक्षा की चुनौतियाँ।

Introduction

शिक्षा का मुख्य कार्य इस बात को प्रमाणित करना है की मनुष्य शब्द अपना अर्थ बचा सके,व्यक्ति का ह्रास होना साधारण है किंतु व्यक्तित्व का पतन अत्यंत कष्टदायी और व्यतित्व की रक्षा जो शिक्षा नहीं सिखा पाती उसका कोई औचित्य नहीं है।

शिक्षा और व्यक्तित्व का वही संबंध है जिस प्रकार खाद और पौधे का,जैसे खाद का कार्य होता है पौधे को पोषित करना विकसित करना ठीक उसी प्रकार शिक्षा व्यक्तिव को जागृत करती है सकारात्मक दिशा प्रदान करती है सही और गलत को चिह्नित करने का दृष्टिकोण प्रदान करती है, शिक्षा रूढ़िवादी मानसिकता से निकालकर उसे स्वतंत्र रूप में विचार करने की राह में अग्रसित करता है, अगर भारतीय शिक्षा के आधुनिकीकरण की बात करे तो निःसंदेह अंग्रेजो का योगदान अविस्मरणीय है यह मात्र परिवर्तन की बात है, फोर्ट विलियम कॉलेज जहां से प्रारंभ हुआ भारतीय समाज में शिक्षा का नया अध्याय जो इतिहास के स्वर्णिम अक्षर में अक्षरित है, आज इक्कीसवीं शताब्दी में शिक्षा के आधुनिकीकरण पर पूरा जोर दिया गया और डिजिटल संसाधनों के माध्यम से इसका प्रचार प्रसार बड़ा जो की शिक्षा के लिए प्रगति का स्रोत रहा किंतु क्या यह व्यक्तित्व के विकास में सहायक रहा? यह एक बड़ा प्रश्न है।

दुनिया बदल रही है, मनुष्यों में बदलाव हो रहा है, हर चीज जैसे–जैसे आगे बढ़ रही है उसका स्तर कहीं ना कहीं अपनी चरम सीमाओं का उल्लंघन करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। शिक्षा की अगर बात की जाए इस क्षेत्र में भी कई नए–नए चीजों का अवलोकन हर व्यक्ति द्वारा अपने तरीके से किया जा रहा है। यदि वास्तविक पहलू पर नजर डाला जाए तो शिक्षा का स्तर वह नहीं रहा जो कि आदिकाल से चला रहा है, जो शिक्षा हम अपने महान ग्रंथों महाभारत,रामायण, ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद, पुराणों में, गीता

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

में, उपनिषद में, अन्य ज्ञान उपदेशक उपन्यासों में पढ़ते हैं। शिक्षा ठीक उनके विपरीत मूल्यों में सामने आ रही है, लोग कहते हैं लोगों का मानना है, दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति यह मानता है कि उन्नति के साथ–साथ हर चीज विकसित हो रही है, किंतु शिक्षा के क्षेत्र में कहीं ना कहीं यह एक विरोधाभास के रूप में सामने आ जाता है। आज की शिक्षा आपको कुछ सिखाएं ना सिखाएं आपको पैसे कमाना अगर सिखा देती है तो आपकी शिक्षा सफल है, किंतु यह वास्तविक शिक्षा का कोई आधार नहीं है क्योंकि जब तक आप मूल्यों को न समझे संस्कारों को न समझे तब तक उच्च शिक्षा का कोई आधार नहीं रह जाता। शिक्षा और सभ्यता कहीं न कहीं एक दूसरे के पूरक है किंतु यह भी कहना गलत होगा जो व्यक्ति शिक्षित है वह सभ्य होगा और हर सभ्य व्यक्ति का शिक्षित होना अनिवार्य है।

यदि उदाहरण के तौर पर देखा जाए तो हमारे द्वारा किसी शिक्षित व्यक्ति द्वारा खाकर कूड़ेदान की जगह इधर–उधर छिल्के को गंदगी इत्यादि फेंक दिया जाता है, वह किसी अनपढ़ व्यक्ति द्वारा उठाकर साफ किया जाता है तो क्या यह शिक्षा की मर्यादा को तय करता है? क्या यह सभ्यता का प्रदर्शन करता है? या उसकी शिक्षा हमसे प्रबल है जो स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें प्रकृति के नियमों को मानकर साफ सफाई करता है।

मात्र रोजी रोटी कमाना, अपने समस्त सुखों की प्राप्ति के लिए शिक्षा का उपयोग करना, चीजों को बिना समझे आगे बढ़ना, छोटी–छोटी बातों पर गुस्सा होकर बिना समझे कोई फैसला करना, क्या शिक्षा का अवतार है? यदि नहीं तो ऐसी शिक्षा का होना ना होना तो समान है। जो किसी व्यक्ति की मुस्कुराहट में तब्दील ना हो सके, ऐसी शिक्षा का महत्व क्या जो एक भूखे को रोटी ना दे सके, ऐसी शिक्षक किस काम की जो किसी मूक प्राणी पर अत्याचार करें, ऐसी शिक्षा से क्या फायदा जब बड़ों का सम्मान न किया जा सके, एक समय था जब शिक्षक रस्ते पर जाते वक्त किसी मार्ग पर टकरा जाते थे तो चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लिया जाता था, किंतु उसी के विपरीत आज के समय में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों द्वारा शिक्षक के सामने धूम्रपान आपत्तिजनक भाषा का प्रयोग खुलेआम किया जाने लगा है। क्या शिक्षा का स्तर इतना ज्यादा गिर चुका है की जो संस्कारों का गला घोट कर संस्कृति को धूल चटा रही है, या हम उसका गलत फायदा उठा रहे हैं, शिक्षा किसी का अपमान करना नहीं सिखाती, शिक्षा किसी को नीचा दिखाना नहीं सिखाती, शिक्षा किसी कमजोर पर अत्याचार करना नहीं सिखाती, शिक्षा बुरे कर्मों का साथ देना नहीं सिखाती,शिक्षा कुछ नया सिखाती है, बदलाव करना सिखाती,शिक्षा कभी भी आपको आगे बढ़ने से रोकती नहीं है।

एक बार किसी कारणवश असफल हो जाने पर उस कार्य को वहीं पर छोड़ना नहीं सिखाती, अपितु उसे पूर्ण करने हेतु एक हौसला प्रदान करती है, एक नई उम्मीद का दीया लिए सामने आती है शिक्षा प्रत्येक छोटे से लेकर हर दर्जे के व्यक्ति का सम्मान करना सिखाती है। नारी का सम्मान करना सिखाती है। शिक्षा विवाह के उपरांत अपनी स्त्री पर अत्याचार करना खरी खोटी सुनाना किसी काम को करने में असमर्थ होने पर उस पर हाथ उठाना नहीं सिखाती। गुरु जी का आदर करना सिखाती है, अपने से बड़े प्रत्येक व्यक्ति को नतमस्तक होकर प्रणाम करना सिखाती है, जब तक शिक्षा के आधारों को मजबूती नहीं प्राप्त हो जाती तब तक शिक्षा का जो मूल बिंदु है वह कभी भी सामने नहीं आएगा। शिक्षा को आधार देने के लिए उसे समझना परम आवश्यक है। और इसके लिए स्वयं को तैयार करना तप करना,ध्यान करना,

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

स्वाध्याय करना, अनिवार्य है। ज्ञान जितना बांटा जाए उतना बढ़ता है। इसी चीज में पैसा और ज्ञान कहीं ना कहीं एक दूसरे के विपरीत है। पैसा बांटने से कमता है और शिक्षा बांटने से बढ़ती है। यही एकमात्र ऐसा मार्ग है, और शिक्षा का एक ऐसा मूल रूप है जो शिक्षा हर चीज से अलग बनाती है। शिक्षा दूसरों से ईर्ष्या करना नहीं सिखाती। शिक्षा स्वयं पर नियंत्रण करना सिखाती है। शिक्षा देश प्रेम सिखाती है। उपभोक्तावादी संस्कृति को स्वयं पर नियंत्रण रखकर ही कम किया जा सकता है, यदि आपके आस पड़ोस के लोगों ने विदेशी चीजों का प्रयोग करना प्रारंभ किया, उन्हें दिखाने के लिए आप उन चीजों को खरीद तो लेते हैं लेकिन यदि आपको उनकी आवश्यकता न हो तो मात्र दिखावे के लिए आप यह कार्य करें तो यह भी आपके शिक्षा को कहीं ना कहीं मृत घोषित कर देती है। तो शिक्षा आपको ऐसी बुरी आदतों से भी बचाती है जो कि आपको दूसरों के सामने तो अच्छा घोषित कर देती है किंतु आप निज निंदा के पात्र बन जाते हैं। यदि आपने सही शिक्षा को पा लिया तो आप एक बात सदैव ध्यान रखें यदि जीवन में आप को मरने के बाद भी जिंदा रहना है, सदैव याद रहे आप को निस्वार्थ भाव से दूसरों के कल्याण के विषय में सोचना जरूर पड़ेगा।

यदि आप किसी का भला कर पाते हैं तो आप सदैव के लिए जिंदा रहोगे। यदि आप एक भी व्यक्ति का भला कर सकते हैं तो सदैव याद रहे आपके गुणगान कहीं ना कहीं इस धरातल पर सजीव रहेंगे। आप अमर हो जाएंगे मरने के बाद भी आप की चर्चाएं होंगी। आपकी आंतरिक शांति का मूलमंत्र यही है की आप किसी को कुछ ऐसा सिखा सके जो उसके जीवन में परिवर्तन के लिए प्रयोजन है, और यही शिक्षा का आधार है शिक्षा के कुछ बिंदु इस प्रकार है इन 11 बिंदुओं पर ध्यान दीजिए, वास्तविक शिक्षा का एक आधार रखने की कोशिश की गई है शिक्षा आपको हारना नहीं सिखाती।

शिक्षा आपको निरंतर प्रयास करना सिखाती है, शिक्षा नदी के जल की तरह होती है जो कभी रुकती नहीं निरंतर चलती रहती है, शिक्षा उस घड़ी की तरह होती है जो चलती रहती है और अगर रुक भी जाए तो दो बार आपको सही वक्त बता कर जाती है, शिक्षा उस पेड़ की तरह होती है जो मरते मरते भी आपको फल फूल लकड़ी देकर जाए, शिक्षा उस साधु की तरह होती है जो आपको ज्ञान भरी बातों के अलावा कुछ दे तो नहीं सकता लेकिन जीवन के उन मूल्यों को समझा बच्चा है जिन मूल्यों को समझ कर आप जीवन को जीवन को भली भांति जी सकते हैं, शिक्षा एक ऐसा मंत्र है जोकि हर मंत्र की जननी भी है हर मंत्र का मूल भी है हर मंत्र का आधार भी है यह स्वयं में ही पूर्ण भी है और स्वयं को पूर्ण करने वाला परम सत्य भी है। शिक्षा संजीवनी बूटी की तरह है जो समस्त सुखों की जननी भी है। समस्त दुखों का नरसंहार करने वाला अस्त्र भी है। अज्ञान को मिटा देने वाला अंधकार का विनाश करने वाला वह हथियार है जो हल्का होने पर भी भारी से भारी दुविधा का विनाश कर सकता है,

शिक्षा वह मार्ग है जिस पर चलकर आप जीते जी अलौकिक जीवन का मोह ले सकते हैं। शिक्षा सभी प्राणी से प्रेम करना सिखाती है। शिक्षा कभी घृणा नहीं सिखाती, शिक्षक कभी किसी की अवहेलना नहीं सिखाती, शिक्षा सबको साथ लेकर चलना सिखाती है किसी का मनभेद कर उसे अकेला छोड़ना नहीं सिखाती। लोगों के दुखों में साथ देना सिखाती है, शिक्षा ऐसी पूंजी है जो कभी चोरी नहीं की जा सकती, किंतु इसके लिए शिक्षा के वास्तविक आधार को मजबूती अगर कोई दे सकता है तो आप स्वयं दे सकते

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

हो। तो शिक्षा की कड़ी को मजबूत बनाने का पूर्ण प्रयास करें और शिक्षा को शिक्षा की तरह लें भिक्षा की तरह नहीं,

शिक्षा डर का पालन करना और मिथ्या का साथ देना नहीं सिखाती, अपितु सत्य के मार्ग पर चलना सिखाती है, शिक्षा अहिंसा का साथी है हिंसा का नहीं शिक्षा। सत्य का साथी है मिथ्या का नहीं। शिक्षा एक पवित्र समावेश है शक्ति का जो एक बार आपके अंदर प्रवेश कर जाए तो बुरी शक्तियों का विनाश स्वयं कर देती है। शिक्षा आशावादी व्यक्तित्व का निर्माण करती है, यह एक विकसित मानसिकता को जन्म देती है जोकि झूठी चीजों को समझने में मदद करती है,

1.माँ जो हमें बुरे के साथ भी अच्छा करना सिखाती है,

2.पिता जो अच्छाई और बुराई का अंतर समझाते है

3.गुरु जो दुनिया को ठीक से देखना सिखाता है गलत सही का फर्क करना,

4.गलतियां जो तुम्हें सामने के लिए सतर्क करती है,

5. तमाम बच्चे तो स्वार्थ से दूर रहना निस्वार्थ रूप से जीना सिखाते है,

6. तमाम बूढ़े वृद्धों से हमें खुश रहने की व्यवस्था करना सीखने को मिलता है

7.हार हमें सिखाता है कि हमारी कोशिश में कमीं कहाँ रह गयी है

8.समय हमें सिखाता है कि परिस्थितियों के ऊंच नीच होने से अपनी रफ्तार को नहीं छोड़ना चाहिए

9.वो तमाम लोग जो हमें निरंतर सिखाते है कि चाहे सारी दुनिया तुम्हारा साथ छोड़ दे तुम खुद का साथ देकर आगे बढ़ना तुम स्वयं के गुरु हो तुम हार नहीं सकते और तुम खुदके मार्गदर्शन के लिए बने हो,

10.दोस्त और वो तमाम लोग जो कुछ न कुछ उम्र कुछ भी हो सिखाते है,

11.प्रेमी जो मात्र प्रेम की कड़ियाँ नहीं अपितु जीवन की परिस्थितियों को भली भाँति अवलोकन करना सिखाये,

उचित शिक्षा मात्र व्यक्तिव ही नहीं अपितु मनुष्य को मनुष्य होने की प्रेरणा भी देती है, शिक्षा में गुणवत्ता बढ़ाने का कार्य सुचारू रूप से मात्र शिक्षको का नहीं अपितु समाज के प्रत्येक व्यक्ति का होना चाहिए,

संदर्भ सूची–

1. शिक्षा क्या है? जे.कृष्णमूर्ति (पृष्ठ 72 अनुशासन) (संस्करण २०२१४ राजपाल एंड सन, दिल्ली–110006)
2. बाल विकास एवं सीखने की प्रक्रिया (राज्य शिक्षा संस्थान,उत्तर प्रदेश, इलाहबाद) (श्री नीतीश्वर कुमार, बेसिक शिक्षा परिषद, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ 51 –55)

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

3. शिक्षण एवं अध्ययन (ब्लाग) –vikaspedia https:@@hi-vikaspedia-in@education@teachers&corner@teaching&and&learning

4. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की परिवर्धित रूपरेखादृ2013 एन. सी. ई. आर. टी (पृष्ठ 118–124) (संपादक श्रीमती रीता श्रीवास्तव, शोध प्राध्यापक, एन. सी. ई. आर. टी, लखनऊ)

4. अधिगम एवं शिक्षण– BEDII&PE4 (उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी) (प्रधान संपादक डॉक्टर प्रवीण कुमार तिवारी, समन्वयक, शिक्षक शिक्षा विभाग, शिक्षाशास्त्र शिक्षाशाखा, हरिद्वार, नैनीताल, उत्तराखंड, पृष्ट (196–211)

5. शिक्षा और समाज–BAED101(उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी) (पृष्ट 242,शर्मा योगेंद्र कुमार, मधुलिका शर्मा, शिक्षा के दार्शनिक आधार, कनिष्क पब्लिशर्स संस्करण 2009, नई दिल्ली)

7. Article& A path to social development by Upali Pannilage- Senior Lecturer] university of ruhana

8. वर्तमान शिक्षा प्रणाली– समस्याएं एवं समाधान – आई आई टी कानपुर